



(अमीरे अहले सुन्नत عليه السلام की किताब
"फ़ैज़ाने रमज़ान" से लिये गए मवाद की पहली किस्त)
ANWARE FAIZANE RAMAZAN (HINDI)

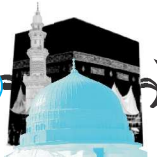
अन्वारे फ़ैज़ाने रमज़ान



- | | |
|---------------------------------|---------------------------------------|
| • माहे नुज़ूले कुरआन 02 | • जन्नत में आका के पड़ोस की बिशारत 11 |
| • महीनों के नाम की वजह 02 | • बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें 15 |
| • रमज़ानुल मुबारक के चार नाम 07 | |

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ
الْعَالِيَةِ



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह ﷻ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

फ़ज़ाइले र-मज़ान शरीफ़

शैतान लाख सुस्ती दिलाए मगर आप हिम्मत कर के फ़ैज़ाने र-मज़ान
(हर साल शा'बानुल मुअज़्ज़म में) मुकम्मल पढ़ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ ﷻ**
इस की ब-र-कतें खुद ही देख लेंगे।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : अल्लाह **ﷻ** के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब **ﷺ** का फ़रमाने तर्क़ुब निशान है : बेशक बरोजे कियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद भेजे।

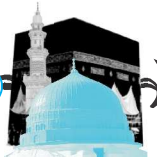
(ترمذی ج ۲ ص ۲۷ حدیث ۴۸۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! खुदाए रहमान **ﷻ** के करोड़हा करोड़ एहसान कि उस ने हमें **माहे र-मज़ान** जैसी अज़ीमुश्शान ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया। माहे र-मज़ान के फ़ैज़ान के क्या कहने ! इस की तो हर घड़ी रहमत भरी है, **र-मज़ानुल मुबारक** में हर नेकी का सवाब **70** गुना या इस से भी ज़ियादा है। (मिरआत, जि. 3, स. 137) नफ़ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब **70** गुना कर दिया जाता है, अर्श उठाने वाले फ़िरिश्ते रोज़ादारों की दुआ पर आमीन कहते हैं और फ़रमाने मुस्तफ़ा **ﷺ** के मुताबिक़ : **"र-मज़ान के रोज़ादार के लिये मछलियां इफ़्तार तक दुआए मग़ि़रत करती रहती हैं।"** (حدیث ۵۰ ص ۲ الترغیب والترہیب)

इबादत का दरवाज़ा : अल्लाह **ﷻ** के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब

(أَلْبَانِی الصّغیر ص ۱۴۶ حدیث ۲۴۱) का फ़रमाने अलीशान है : **"रोज़ा इबादत का दरवाज़ा है।"**



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक न पड़े। (ترمذی)

नुज़ूले कुरआन : इस माहे मुबारक की एक खुसूसियत येह भी है कि **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** ने इस में कुरआने पाक नाज़िल फ़रमाया है। चुनान्वे पारह 2 सू-रतुल ब-क़रह आयत 185 में मुक़द्दस कुरआन में खुदाए रहमान **عَزَّوَجَلَّ** का फ़रमाने अलीशान है :

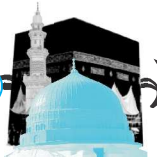
شَهْرَ رَمَضَانَ الَّذِي أُنْزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ
هُدًى لِلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ
فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَنْ
كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ
أُخَرُ ۗ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ
الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَى
مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٢٠٥﴾

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : र-मज़ान का महीना, जिस में कुरआन उतरा, लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई और फ़ैसले की रोशन बातें, तो तुम में जो कोई येह महीना पाए ज़रूर इस के रोज़े रखे और जो बीमार या सफ़र में हो, तो उतने रोज़े और दिनों में। **अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ)** तुम पर आसानी चाहता है और तुम पर दुश्वारी नहीं चाहता और इस लिये कि तुम गिनती पूरी करो और **अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ)** की बड़ाई बोलो इस पर कि उस ने तुम्हें हिदायत की और कहीं तुम हक़ गुज़ार हो।

महीनों के नाम की वजह : र-मज़ान, येह “रम्जुन” से बना जिस के मा’ना हैं : “गरमी से जलना।” क्यूं कि जब महीनों के नाम क़दीम अ-रबों की ज़बान से नक़ल किये गए तो उस वक़्त जिस क़िस्म का मौसिम था उस के मुताबिक़ महीनों के नाम रख दिये गए इतिफ़ाक़ से उस वक़्त र-मज़ान सख़्त गर्मियों में आया था इसी लिये येह नाम रख दिया गया। (الْأَنْهَاءُ لِأَيِّنِ الْآثِيرِ ٢ ص ٢٤٠) **هَجْرَتِ** मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّانِ** फ़रमाते हैं : बा’ज़ मुफ़स्सरीन **رَحِمَهُمُ اللَّهُ الْمُبِين** ने फ़रमाया कि जब महीनों के नाम रखे गए तो जिस मौसिम में जो महीना था उसी से उस का नाम हुवा। जो महीना गरमी में था उसे र-मज़ान कह दिया गया और जो मौसिमे बहार में था उसे रबीज़ल अव्वल और जो सर्दी में था जब पानी जम रहा था उसे जुमादल ऊला कहा गया।

(तफ़्सीरे नईमी, जि. 2, स. 205)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



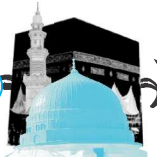
फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पड़े अल्लाह ﷻ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

सुख़ याकूत का घर : हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है : मक्की म-दनी सुल्तान, रहमते आ-लमिय्यान **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने रहमत निशान है : “जब माहे र-मज़ान की पहली रात आती है तो आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और आखिरी रात तक बन्द नहीं होते। जो कोई बन्दा इस माहे मुबारक की किसी भी रात में नमाज़ पढ़ता है तो **اَللّٰهُ ﷻ** उस के हर सज्दे के इवज़ (या'नी बदले में) उस के लिये पन्दरह सो नेकियां लिखता है और उस के लिये जन्नत में **सुख़ याकूत का घर** बनाता है। पस जो कोई माहे र-मज़ान का **पहला रोज़ा** रखता है तो उस के साबिका गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं, और उस के लिये सुबह से शाम तक **70 हज़ार फ़िरिशते** दुआए मग़फ़रत करते रहते हैं। रात और दिन में जब भी वोह **सज्दा** करता है उस के हर सज्दे के बदले उसे (जन्नत में) एक एक ऐसा दरख़्त अता किया जाता है कि उस के साए में (घोड़े) सुवार **पांच सो बरस** तक चलता रहे।”

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ٣١٤ حديث ٣٦٣٥ مُلَخَّصًا)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

नाबीना भान्जी बीना हो गई (म-दनी बहार) : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक “दा'वते इस्लामी” के म-दनी माहोल से वाबस्ता आशिक़ाने रसूल की सोहबत हासिल होने की सूरत में **माहे र-मज़ानुल मुबारक** की ब-र-कतें लूटने का बहुत ज़ेहन बनता है वरना बुरी सोहबतों में रह कर इस मुबारक महीने में भी अक्सर लोग गुनाहों में पड़े रहते हैं। आइये ! गुनाहों की दलदल में धंसे हुए एक **फ़नकार** की “म-दनी बहार” सुनिये जिसे दा'वते इस्लामी के **म-दनी माहोल** ने रहमते इलाही से म-दनी रंग चढ़ा दिया और उस की नाबीना भान्जी को बीना बना दिया ! चुनान्वे ओरंगी टाउन (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई **फ़नकार** थे, म्यूज़िकल प्रोग्राम्ज़ और फ़न्कशन्ज़ के अन्दर ज़िन्दगी के अनमोल अवकात बरबाद हुए जा रहे थे, क़ल्बो दिमाग़ पर ग़फ़लत के कुछ ऐसे पर्दे पड़े थे कि न नमाज़ की तौफ़ीक़ थी न गुनाहों का एहसास। सहाराए मदीना बाबुल मदीना



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس کے پاس मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख्त हो गया ! (ابن سنی)

कराची में बाबुल इस्लाम सत्ह पर होने वाले तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ (1424 सि.हि. 2003 सि.ई.) में हाज़िरी के लिये एक जिम्मेदार इस्लामी भाई ने इन्फ़िरादी कोशिश कर के तरगीब दिलाई। ज़हे नसीब ! उन्हें उस में शिकत की सआदत मिल गई। तीन रोज़ा इज्तिमाअ के इख़िताम पर रिक्कत अंगेज़ दुआ में उन्हें अपने गुनाहों पर बहुत ज़ियादा नदामत हुई, वोह अपने ज़ब्बात पर काबू न पा सके और फूट फूट कर रोने लगे, बस रोने ने काम दिखा दिया ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ﷻ उन्हें दा'वते इस्लामी का म-दनी माहोल मिल गया और उन्होंने ने रक्सो सुरूद की महफ़िलों से तौबा कर ली और म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लिया। ब तारीख़ 25 दिसम्बर 2004 ई. म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र पर रवानगी के वक़्त उन्हें छोटी बहन का फ़ोन आया, उन्होंने ने भर्साई हुई आवाज़ में अपने यहां होने वाली नाबीना बच्ची की विलादत की ख़बर सुनाई और साथ ही कहा : डॉक्टरों ने कह दिया है कि इस की आंखें रोशन नहीं हो सकतीं। इतना कहने के बा'द बन्द टूटा और छोटी बहन सदमे से बिलक बिलक कर रोने लगी। उन इस्लामी भाई ने येह कह कर ढारस बंधाई कि اِنْ شَاءَ اللّٰهُ ﷻ म-दनी क़ाफ़िले में दुआ करूंगा। उन्होंने ने म-दनी क़ाफ़िले में खुद भी दुआएं कीं और म-दनी क़ाफ़िले वाले आशिक़ाने रसूल से भी दुआएं करवाई। जब म-दनी क़ाफ़िले से पलटे तो दूसरे ही दिन छोटी बहन ने फ़ोन पर खुशी खुशी येह ख़बरे फ़रहत असर सुनाई कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ﷻ मेरी नाबीना बेटी महक की आंखें रोशन हो गई हैं और डॉक्टर्ज़ तअज्जुब कर रहे हैं कि येह कैसे हो गया ! क्यूं कि हमारी डॉक्टरी में इस का कोई इलाज ही नहीं था ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ﷻ उन्हें बाबुल मदीना कराची में अ़लाक़ाई मुशा-वरत के एक रुक्न की हैसियत से दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के लिये कोशिशें करने की सआदतें भी हासिल हुई।

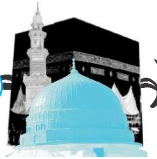
आफ़तों से न डर, रख करम पर नज़र

रोशन आंखें मिलें, क़ाफ़िले में चलो

आप को चारागर, ने गो मायूस कर

भी दिया मत डरें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبُ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (مجمع الزوائد)

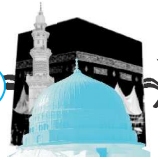
मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दा'वते इस्लामी का म-दनी माहोल कितना प्यारा प्यारा है। इस के दामन में आ कर मुआ-शरे के न जाने कितने ही बिगड़े हुए अपराध बा किरदार बन कर सुन्नतों भरी बा इज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़रने लगे नीज़ म-दनी क़ाफ़िलों की म-दनी बहारें भी आप के सामने हैं। जिस तरह म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से बा'जों की दुन्यवी मुसीबत रुख़्सत हो जाती है, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इसी तरह ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, सरापा रहमत, शफ़ीए उम्मत **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की शफ़ाअत से आख़िरत की मशक्कत भी राहत में ढल जाएगी।

टूट जाएंगे गुनहगारों के फ़ौरन क़ैदो बन्द
हशर को खुल जाएगी ताक़त रसूलुल्लाह की

(हदाइके बख़्शिश, स. 153)

पांच खुसूसी करम : हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि रहमते आ-लमिय्यान, सुल्ताने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने ज़ीशान है : “मेरी उम्मत को माहे र-मज़ान में **पांच चीज़ें** ऐसी अता की गई जो मुझ से पहले किसी नबी को न मिलीं : **﴿1﴾** जब र-मज़ानुल मुबारक की पहली रात होती है तो **अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ**** इन की तरफ़ रहमत की नज़र फ़रमाता है और जिस की तरफ़ **अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ**** नज़रे रहमत फ़रमाए उसे कभी भी अज़ाब न देगा **﴿2﴾** शाम के वक़्त इन के मुंह की बू (जो भूक की वजह से होती है) **अल्लाह तआला** के नज़्दीक मुश्क की खुशबू से भी बेहतर है **﴿3﴾** फ़िरिश्ते हर रात और दिन इन के लिये मग़िफ़रत की दुआएं करते रहते हैं **﴿4﴾** **अल्लाह तआला** जन्नत को हुक्म फ़रमाता है : “मेरे (नेक) बन्दों के लिये मुजय्यन (या'नी आरास्ता) हो जा अन्करीब वोह दुन्या की मशक्कत से मेरे घर और करम में राहत पाएंगे” **﴿5﴾** जब माहे र-मज़ान की आख़िरी रात आती है तो **अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ**** सब की मग़िफ़रत फ़रमा देता है। कौम में से एक शख्स ने खड़े हो कर अर्ज़ की : **या रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ! क्या वोह लय-लतुल क़द्र है ?**” इर्शाद फ़रमाया : नहीं, क्या तुम नहीं देखते कि मजदूर जब अपने कामों से फ़ारिग़ हो जाते हैं तो उन्हें उजरत दी जाती है।”

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ٣٠٣ حدیث ٣٦٠٢)



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की ! (عبدالرزاق)

सगीरा गुनाहों का कफ़ारा : हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मरवी है : हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़े यौमुन्नुशूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने पुर सुरूर है : “पांचों नमाज़ें और जुमुआ अगले जुमुआ तक और माहे र-मज़ान अगले माहे र-मज़ान तक गुनाहों का कफ़ारा हैं जब तक कि कबीरा गुनाहों से बचा जाए ।” (مسلم ص १६६ حديث २३३)

काश ! पूरा साल र-मज़ान ही हो ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे प्यारे आका, मक्के मदीने वाले मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने अलीशान है : “अगर बन्दों को मा’लूम होता कि र-मज़ान क्या है तो मेरी उम्मत तमन्ना करती कि काश ! पूरा साल र-मज़ान ही हो ।” (ابن حُرَيْمَة ج ३ ص १९० حديث १८८६)

आका **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का बयाने जन्नत निशान :** हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं कि “महबूबे रहमान, सरवरे ज़ीशान, रहमते आ-लमिय्यान, मक्की म-दनी सुल्तान **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने माहे शा’बान के आख़िरी दिन बयान फ़रमाया : “ऐ लोगो ! तुम्हारे पास अ-ज़मत वाला ब-र-कत वाला महीना आया, वोह महीना जिस में एक रात (ऐसी भी है जो) हज़ार महीनों से बेहतर है, इस (माहे मुबारक) के रोज़े **عَزَّوَجَلَّ** ने फ़र्ज किये और इस की रात में क़ियाम¹ तत्व्वाअ (या’नी सुन्नत) है, जो इस में नेकी का काम करे तो ऐसा है जैसे और किसी महीने में फ़र्ज अदा किया और इस में जिस ने **फ़र्ज** अदा किया तो ऐसा है जैसे और दिनों में **70** **फ़र्ज** अदा किये । येह महीना **सब्र** का है और **सब्र** का सवाब जन्नत है और येह महीना मुआसात (या’नी ग़म ख़वारी और भलाई) का है और इस महीने में मोमिन का रिज़्क बढ़ाया जाता है । जो इस में रोज़ादार को **इफ़्तार** कराए उस के गुनाहों के लिये **मग़िफ़रत** है और उस की गरदन आग से आज़ाद कर दी जाएगी और इस इफ़्तार कराने वाले को वैसा ही सवाब मिलेगा जैसा रोज़ा रखने वाले को मिलेगा, बिग़ैर इस के कि उस के अन्न में कुछ कमी हो ।” हम ने अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** !** हम में से हर शख़्स वोह चीज़ नहीं पाता जिस से रोज़ा इफ़्तार करवाए । आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** ने **لَا يَنْبَغُ**

1 : यहां क़ियाम से मुराद तरावीह है ।

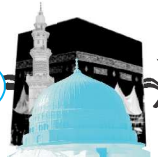
फरमाने मुस्तफा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शफाअत करूंगा । (جمع الجوامع)

इशार्द फ़रमाया : “अल्लाह तअ़ाला येह सवाब तो उस शख़्स को देगा जो एक घूंट दूध या एक खज़ूर या एक घूंट पानी से रोज़ा इफ़्तार करवाए और जिस ने रोज़ादार को पेट भर कर खिलाया, उस को अल्लाह तअ़ाला मेरे हौज़ से पिलाएगा कि कभी प्यासा न होगा, यहां तक कि जन्नत में दाख़िल हो जाए। येह वोह महीना है कि इस का अव्वल (या'नी इब्तिदाई दस दिन) रहमत है और इस का औसत (या'नी दरमियानी दस दिन) मग़ि़रत है और आख़िर (या'नी आख़िरी दस दिन) जहन्म से आज़ादी है। जो अपने गुलाम पर इस महीने में तख़्फ़ीफ़ करे (या'नी काम कम ले) अल्लाह तअ़ाला उसे बख़्श देगा और जहन्म से आज़ाद फ़रमा देगा। इस महीने में चार बातों की कसरत करो, उन में से दो ऐसी हैं जिन के ज़रीए तुम अपने रब **عَزَّوَجَلَّ** को राज़ी करोगे और बक़िय्या दो से तुम्हें बे नियाज़ी नहीं। पस वोह दो बातें जिन के ज़रीए तुम अपने रब **عَزَّوَجَلَّ** को राज़ी करोगे वोह येह हैं : **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ﴿1﴾** की गवाही देना **﴿2﴾** इस्तिग़फ़ार करना। जब कि वोह दो बातें जिन से तुम्हें गुना (या'नी बे नियाज़ी) नहीं वोह येह हैं : (1) अल्लाह तअ़ाला से जन्नत त़लब करना (2) जहन्म से अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की पनाह त़लब करना।”

(شُعْبُ الْإِيمَان ج ۳ ص ۳۰۵ حدیث ۳۶۰۸، ابن خُزَیمَہ ج ۳ ص ۱۹۲ حدیث ۱۸۸۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी जो हृदीसे पाक बयान की गई उस में माहे र-मज़ानुल मुबारक की रहमतों, ब-र-कतों और अ-ज़-मतों का ख़ूब ख़ूब तज़्किरा है। इस माहे मुबारक में कलिमा शरीफ़ ज़ियादा ता'दाद में पढ़ कर और बार बार इस्तिग़फ़ार या'नी ख़ूब तौबा के ज़रीए अल्लाह तअ़ाला को राज़ी करने की सई (कोशिश) करनी है और अल्लाह तअ़ाला से जन्नत में दाख़िले और जहन्नम से पनाह की बहुत ज़ियादा इल्तिजाएं करनी हैं।

र-मज़ानुल मुबारक के चार नाम : अल्लाहु अकबर **عَزَّوَجَلَّ** ! माहे र-मज़ान का भी क्या ख़ूब फ़ैज़ान है ! मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَقِّ** तफ़्सीरे नईमी में फ़रमाते हैं : “इस माहे मुबारक के कुल चार नाम हैं **﴿1﴾** माहे र-मज़ान **﴿2﴾** माहे सब्र **﴿3﴾** माहे मुआसात और **﴿4﴾** माहे वुस्अते रिज़्क ।” मज़ीद फ़रमाते हैं : “रोज़ा सब्र



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس کے پاس میرا جिकر ہوا اور اس نے مجھ پر دुरूدے پاک نہ پڑا اس نے جنت کا راستا
 छोड़ दिया ! (طبرانی)

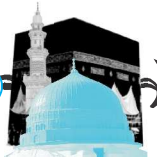
है जिस की जज़ा रब **عَزَّوَجَلَّ** है और वोह इसी महीने में रखा जाता है। इस लिये इसे **माहे सब्र** कहते हैं। **मुआसात** के मा'ना हैं भलाई करना। चूँकि इस महीने में सारे मुसलमानों से ख़ास कर अहले क़राबत (या'नी रिश्तेदारों) से भलाई करना ज़ियादा सवाब है इस लिये इसे **माहे मुआसात** कहते हैं इस में रिज़्क की फ़राख़ी (या'नी ज़ियादती) भी होती है कि ग़रीब भी ने'मतें खा लेते हैं, इसी लिये इस का नाम माहे वुस्अते रिज़्क भी है।”

(तफ़सीरे नईमी, जि. 2, स. 208)

“माहे र-मज़ान मुबारक” के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से 13 म-दनी फूल

(येह तमाम म-दनी फूल तफ़सीरे नईमी जिल्द 2 से लिये गए हैं)

- ❶ **का'बा** मुअज़्ज़मा मुसलमानों को बुला कर देता है और येह आ कर **रहमतें** बांटता है। गोया वोह (या'नी का'बा) कूवां है और येह (या'नी र-मज़ान शरीफ़) दरिया, या वोह (या'नी का'बा) दरिया है और येह (या'नी र-मज़ान) बारिश।
- ❷ **हर** महीने में ख़ास तारीखें और तारीखों में भी ख़ास वक़्त में इबादत होती है, म-सलन बक़र ईद की चन्द (मख़्सूस) तारीखों में **हज**, मुहर्रम की दसवीं तारीख़ अफ़ज़ल, मगर **माहे र-मज़ान** में हर दिन और हर वक़्त इबादत होती है। रोज़ा इबादत, इफ़तार इबादत, इफ़तार के बा'द तरावीह का इन्तिज़ार इबादत, तरावीह पढ़ कर स-हरी के इन्तिज़ार में सोना इबादत, फिर स-हरी खाना भी इबादत, अल ग़रज़ हर आन में खुदा (**عَزَّوَجَلَّ**) की शान नज़र आती है।
- ❸ **र-मज़ान** एक भट्टी है जैसे कि भट्टी गन्दे लोहे को साफ़ और साफ़ लोहे को मशीन का पुर्ज़ा बना कर कीमती कर देती है और सोने को ज़ेवर बना कर इस्ति'माल के लाइक़ कर देती है, ऐसे ही **माहे र-मज़ान** गुनहगारों को पाक करता और नेक लोगों के द-रजे बढ़ाता है।
- ❹ **र-मज़ान** में नफ़ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब **70** गुना मिलता है।
- ❺ **बा'ज** उ-लमा फ़रमाते हैं कि जो र-मज़ान में मर जाए उस से सुवालाते क़ब्र भी नहीं होते।



फ़रमाने मुस्तफ़ा (ﷺ) : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाहुल है। (ابو یعلیٰ)

﴿6﴾ इस महीने में शबे क़द्र है, गुज़श्ता आयत (या'नी पारह 2 सू-रतुल ब-क़रह आयत 185) से मा'लूम हुवा कि कुरआन र-मज़ान में आया और दूसरी जगह फ़रमाया :

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۝

(پ ۳۰، القدر: ۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा।

दोनों आयतों के मिलाने से मा'लूम हुवा कि शबे क़द्र र-मज़ान में ही है और वोह ग़ालिबन सत्ताईसवीं शब है, क्यूं कि लय-लतुल क़द्र (لَيْلَةُ الْقَدْرِ) में नव हुरूफ़ हैं और येह लफ़ज़ सूराए क़द्र में तीन बार आया। जिस से सत्ताईस हासिल हुए मा'लूम हुवा कि वोह सत्ताईसवीं शब है।

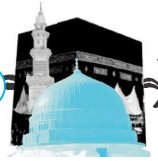
﴿7﴾ र-मज़ान में दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द हो जाते हैं जन्नत आरास्ता की जाती है, इस के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। इसी लिये इन दिनों में नेकियों की ज़ियादती और गुनाहों की कमी होती है जो लोग गुनाह करते भी है वोह नफ़से अम्मारा या अपने साथी शैतान (हमज़ाद) के बहकाने से करते हैं।

﴿8﴾ र-मज़ान के खाने पीने का हिसाब नहीं। (या'नी स-हरो इफ़्तार के खाने पीने का)

﴿9﴾ क़ियामत में र-मज़ान व कुरआन रोज़ादार की शफ़ाअत करेंगे कि र-मज़ान तो कहेगा : मौला (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं ने इसे दिन में खाने पीने से रोका था और कुरआन अर्ज़ करेगा कि या रब (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं ने इसे रात में तिलावत व तरावीह के ज़रीए सोने से रोका।

﴿10﴾ हुज़ूर (ﷺ) र-मज़ानुल मुबारक में हर कैदी को छोड़ देते थे और हर साइल को अता फ़रमाते थे, रब (عَزَّوَجَلَّ) भी र-मज़ान में जहन्नमियों को छोड़ता है, लिहाज़ा चाहिये कि र-मज़ान में नेक काम किये जाएं और गुनाहों से बचा जाए।

﴿11﴾ कुरआने करीम में सिर्फ़ र-मज़ान शरीफ़ ही का नाम लिया गया और इसी के फ़ज़ाइल बयान हुए, किसी दूसरे महीने का न सरा-हतन नाम है न ऐसे फ़ज़ाइल। महीनों में सिर्फ़



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس کے پاس میرا جِکڑ ہو اور وہہ مُضِلّ پر دُرُود شَرِیْف نہ پڑھے تو وہہ لوگوں میں سے کَنْجُوس
تरीن شَرِیْف ہے ! (مسند احمد)

माहे र-मज़ान का नाम कुरआन शरीफ़ में लिया गया । औरतों में सिर्फ़ बीबी मरयम
رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का नाम कुरआन में आया । सहाबा में सिर्फ़ हज़रते (सय्यिदुना) ज़ैद इब्ने
हारिसा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) का नाम कुरआन में लिया गया जिस से इन तीनों की अ-ज़मत
मा'लूम हुई ।

12 र-मज़ान शरीफ़ में इफ़्तार और स-हरी के वक़्त दुआ क़बूल होती है या'नी इफ़्तार करते
वक़्त और स-हरी खा कर । येह मर्तबा किसी और महीने को हासिल नहीं ।

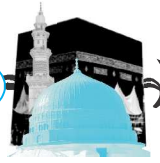
13 र-मज़ान में पांच हुरूफ़ हैं : ر, م, ض, ه, ن । से मुराद रहमते इलाही, ميم से मुराद महब्बते
इलाही, ض से मुराद ज़माने इलाही, اَلِف से अमाने इलाही, ن से नूरे इलाही । और
र-मज़ान में पांच इबादात खुसूसी होती हैं : रोज़ा, तरावीह, तिलावते कुरआन, ए'तिकाफ़,
शबे क़द्र में इबादात । तो जो कोई सिद्के दिल से येह पांच इबादात करे वोह उन पांच
इन्ज़ामों का मुस्तहिक़ है । (तफ़सीरे नईमी, जि. 2, स. 208)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

जन्नत सजाई जाती है : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत
है कि ताजदार मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना ﷺ
का फ़रमाने बा करीना है : बेशक जन्नत साल के शुरूअ से अगले साल तक र-मज़ानुल मुबारक
के लिये सजाई जाती है । और फ़रमाया : र-मज़ान शरीफ़ के पहले दिन जन्नत के दरख़्तों के पत्तों से
बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरों पर हवा चलती है और वोह अर्ज़ करती हैं : “ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! अपने
बन्दों में से ऐसे बन्दों को हमारा शोहर बना जिन को देख कर हमारी आंखें ठन्डी हों और जब वोह हमें
देखें तो उन की आंखें भी ठन्डी हों ।”

(شُعَبُ الْإِيمَان ج 3 ص 312 حديث 3623)

जन्नत कौन सजाता है ? : मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार
ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنّان हदीसे पाक के इस हिस्से : “बेशक जन्नत साल के शुरूअ से अगले साल तक



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

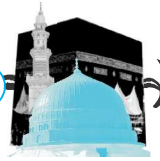
र-मज़ान के लिये सजाई जाती है” के तहत मिरआत जिल्द 3 सफ़हा 142 ता 143 पर फ़रमाते हैं : या’नी ईदुल फ़ित्र का चांद नज़र आते ही, अगले र-मज़ान के लिये जन्नत की आरास्तगी (या’नी सजावट) शुरूअ हो जाती है और साल भर तक फ़रिश्ते इसे सजाते रहते हैं जन्नत खुद सजी सजाई फिर और भी ज़ियादा सजाई जाए, फिर सजाने वाले फ़रिश्ते हों, तो कैसी सजाई जाती होगी, इस की सजावट हमारे वहमो गुमान से वरा है, बा’ज मुसल्मान र-मज़ान में मस्जिदें सजाते हैं, वहां क़-ल-ई चूना करते हैं, झन्डियां लगाते, रोशनी करते हैं इन की अस्ल येह ही हदीस है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! जन्नत की अ-जमत की तो क्या ही बात है ! काश ! हमें बे हिसाब बख़्श

दिया जाए और जन्नतुल फ़िरदौस में मदीने वाले आका मक्की म-दनी मुस्तफ़ा ﷺ का पड़ोस नसीब हो जाए। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, दा’वते इस्लामी अहले हक़ की म-दनी तहरीक है, इस से हर दम वाबस्ता रहिये, दा’वते इस्लामी वालों पर कैसी कैसी करम नवाज़ियां होती हैं इस की एक म-दनी बहार मुला-हज़ा फ़रमाइये :

जन्नत में आका ﷺ के पड़ोस की बिशारत : इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को मुफ़्त दर्से निज़ामी करवाने के लिये اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा’वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम मु-तअद्दिद जामिआत बनाम जामिअतुल मदीना काइम हैं। 1427 اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ सि.हि. में दा’वते इस्लामी के इन जामिआतुल मदीना (बाबुल मदीना कराची) के तक्रीबन 160 त-ल-बए किराम ने हाथों हाथ 12 माह के लिये राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र इख़्तियार किया। इब्तिदाअन म-दनी काफ़िला कोर्स करवाने की तरकीब बनी, इस दौरान त-लबा के ज़ब्बए ख़िदमते इस्लाम को मज़ीद मदीने के 12 चांद लग गए और उन में से तक्रीबन 77 त-ल-बए किराम ने उम्र भर के लिये अपने आप को म-दनी काफ़िलों के लिये पेश कर दिया ! इस अज़ीम



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुद्दार से उठे। (شعب الایمان)

कुरबानी पर हौसला अफ़ज़ाई की बड़ी ज़बर दस्त सूरत बनी और वोह येह कि ख़्वाब में सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर दगार दो आलम के मालिको मुख्तार, शहन्शाहे अबरार ﷺ के दीदार से एक आशिके रसूल की आंखें ठन्डी हुई, लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई, रहमत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : “जिस जिस ने अपने आप को उम्र भर के लिये पेश कर दिया है मैं उन को जन्नत के अन्दर अपने साथ रखूंगा।” ख़्वाब देखने वाले आशिके रसूल के दिल में हसरत हुई कि काश ! सद करोड़ काश ! मुझे भी इन खुश नसीबों में शामिल कर लिया जाता। अल्लाह ﷻ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब ﷺ ने मेरे दिल की बात जान ली और फ़रमाया : “अगर तुम भी इन में शामिल होना चाहते हो तो अपने आप को उम्र भर के लिये पेश कर दो।”

सरे अर्श पर है तेरी गुज़र, दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र

म-लकूतो मुल्क में कोई शै, नहीं वोह जो तुझ पे इयां नहीं

(हदाइके बख़्शिश, स. 109)

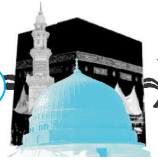
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! ﷺ

खुश नसीब आशिकाने रसूल को बिशारते उज़्मा मुबारक हो ! अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की रहमत पर नज़र रखते हुए क़वी उम्मीद है कि जिन बख़्त-वरो के लिये येह म-दनी ख़्वाब देखा गया है إِنَّ شَاءَ اللَّهُ ﷻ उन का ख़ातिमा ईमान पर होगा और वोह म-दनी आक़ा ﷺ के तुफ़ैल जन्नतुल फ़िरदौस में आप ﷺ का पड़ोस पाएंगे। ताहम येह याद रहे ! कि ग़ैरे नबी जो ख़्वाब देखे वोह शरअन हुज्जत (या'नी दलील) नहीं होता, ख़्वाब की बिशारत की बुन्याद पर किसी को यकीनी तौर पर जन्नती नहीं कहा जा सकता।

इज़्ज़न से तेरे सरे ह़शर कहें काश ! हुज़ूर

साथ अत्तार को जन्नत में रखूंगा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 86)



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

हर शब साठ हज़ार की बख़्शिश : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने मस्क़द رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

से रिवायत है कि शहन्शाहे ज़ीशान, मक्की म-दनी सुल्तान, रहमते आ-लमिय्यान, महबूबे रहमान

ﷺ का फ़रमाने रहमत निशान है : “र-मज़ान शरीफ़ की हर शब आस्मानों में

सुब्हे सादिक तक एक मुनादी (या'नी ए'लान करने वाला फ़िरिश्ता) येह निदा (ए'लान) करता है : ऐ

भलाई तलब करने वाले ! इरादा पुख़्ता कर ले और खुश हो जा, और ऐ बुराई का इरादा रखने वाले !

बुराई से बाज़ आ जा । है कोई मग़िफ़रत का तलब गार ! कि उस की तलब पूरी की जाए । है कोई

तौबा करने वाला ! कि उस की तौबा क़बूल की जाए । है कोई दुआ मांगने वाला ! कि उस की दुआ

क़बूल की जाए । है कोई साइल ! कि उस का सुवाल पूरा किया जाए । अल्लाह तआला र-मज़ानुल

मुबारक की हर शब में इफ़तार के वक़्त साठ हज़ार गुनाहगारों को दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमा

देता है, और ईद के दिन सारे महीने के बराबर गुनाहगारों की बख़्शिश की जाती है ।”

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ٣٠٤ حدیث ٣٦٠)

मदीने के दीवानो ! र-मज़ानुल मुबारक की जल्वा गरी तो क्या होती है, हम ग़रीबों

के वारे न्यारे हो जाते हैं । अल्लाह तआला के फ़ज़लो करम से रहमत के दरवाज़े खोल दिये

जाते हैं और ख़ूब मग़िफ़रत के परवाने तक्सीम होते हैं । काश ! हम गुनाहगारों को ब तुफ़ैले

माहे र-मज़ान, सरवरे कौनो मकान, मक्की म-दनी सुल्तान, रहमते आ-लमिय्यान, महबूबे

रहमान ﷺ के रहमत भरे हाथों जहन्नम से रिहाई का परवाना मिल जाए । इमामे

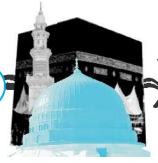
अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बारगाहे रिसालत ﷺ में अर्ज़ करते हैं :

तमन्ना है फ़रमाइये रोज़े महशर येह तेरी रिहाई की चिन्नी मिली है

(हदाइके बख़्शिश, स. 188)

रोज़ाना दस लाख की दोज़ख़ से रिहाई : सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार

ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : “जब र-मज़ान की पहली रात होती है तो अल्लाह तआला



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह ﷻ तुम पर रहमत भेजेगा। (ابن عدى)

अपनी मख़्लूक की तरफ़ नज़र फ़रमाता है और जब अल्लाह ﷻ किसी बन्दे की तरफ़ नज़र फ़रमाए तो उसे कभी अज़ाब न देगा और हर रोज़ दस लाख को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है और जब उन्तीसवीं रात होती है तो महीने भर में जितने आज़ाद किये उन के मज्मूए के बराबर उस एक रात में आज़ाद फ़रमाता है। फिर जब ईदुल फ़ित्र की रात आती है, मलाएका खुशी करते हैं और अल्लाह ﷻ अपने नूर की खास तजल्ली फ़रमाता है और फ़िरिशतों से फ़रमाता है : “ऐ गुरौहे मलाएका ! उस मजदूर का क्या बदला है जिस ने काम पूरा कर लिया ?” फ़िरिशते अर्ज़ करते हैं : “उस को पूरा पूरा अन्न दिया जाए।” अल्लाह तआला फ़रमाता है : “मैं तुम्हें गवाह करता हूँ कि मैं ने इन सब को बख़्श दिया।”

(جَمْعُ الْجَوَامِع ج ۱ ص ۳۴۰ حدیث ۲۰۳۶)

जुमुआ की हर हर घड़ी में दस लाख की मग़ि़रत : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है कि महबूबे रब्बुल आ-लमीन, सय्यिदुल अम्बियाए वल मु़र-सलीन ﷺ का फ़रमाने दिल नशीन है : “अल्लाह ﷻ माहे र-मज़ान में रोज़ाना इफ़्तार के वक़्त दस लाख ऐसे गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है जिन पर गुनाहों की वजह से जहन्नम वाजिब हो चुका था, नीज़ शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ (या'नी जुम्आरात को गुरुबे आफ़ताब से ले कर जुमुआ को गुरुबे आफ़ताब तक) की हर हर घड़ी में ऐसे दस दस लाख गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद किया जाता है जो अज़ाब के हक़दार क़रार दिये जा चुके होते हैं।”

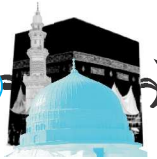
(أَلْفَرَدُوس بِمَأْثُورِ الْخُطَاب ج ۳ ص ۳۲۰ حدیث ۴۹۶۰)

आशिक़ाने र-मज़ान ! बयान कर्दा अह़ादीसे मुबा-रका में रब्बुल अनाम ﷻ के किस क़दर अज़ीमुश्शान इन्आमो इक्राम का ज़िक्र है। ऐ काश ! अल्लाह तआला हम गुनहगारों को भी मग़ि़रत याफ़्तगान में शामिल कर ले।

أَمِينٌ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

इस्य़ां से कभी हम ने कनारा न किया पर तूने दिल आजुर्दा हमारा न किया
हम ने तो जहन्नम की बहुत की तज्वीज़ लेकिन तेरी रहमत ने गवारा न किया

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



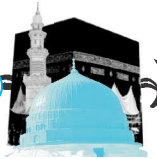
फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुझ पर कसरत से दुरुदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मरिफ़रत है। (ابن عساکر)

खर्च में कुशा-दगी करो : हज़रते सय्यिदुना ज़मुरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि रहमते आ-लमिय्यान, सरदारो दो जहान, महबूबे रहमान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : “माहे र-मज़ान में (घर वालों के) खर्च में कुशा-दगी करो क्यूं कि माहे र-मज़ान में खर्च करना अल्लाह तआला की राह में खर्च करने की तरह है।” (فضائل شهر رمضان مع موسوعة ابن أبي الدنيا ج ١ ص ٣٦٨ حديث ٢٤)

भलाई ही भलाई : अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाया करते : “उस महीने को खुश आ-मदीद जो हमें पाक करने वाला है। पूरा र-मज़ान ख़ैर ही ख़ैर (या'नी भलाई ही भलाई) है दिन का रोज़ा हो या रात का क़ियाम, इस महीने में खर्च करना जिहाद में खर्च करने का द-रजा रखता है।” (تَنْبِيْهُ الْغَافِلِيْنَ ص ١٧٧)

बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि रहमते आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : “जब र-मज़ान शरीफ़ की पहली रात आती है तो अर्शे अज़ीम के नीचे से मसीरा नामी हवा चलती है जो जन्नत के दरख़्तों के पत्तों को हिलाती है, इस हवा के चलने से ऐसी दिलकश आवाज़ बुलन्द होती है कि इस से बेहतर आवाज़ आज तक किसी ने नहीं सुनी। इस आवाज़ को सुन कर बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें ज़ाहिर होती हैं यहां तक कि जन्नत के बुलन्द महल्लात पर खड़ी हो जाती हैं और कहती हैं : “है कोई जो हम को अल्लाह तआला से मांग ले कि हमारा निकाह उस से हो ?” फिर वोह हूरें दारोगए जन्नत (हज़रते) रिज़वान (عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) से पूछती हैं : “आज येह कैसी रात है ?” (हज़रते) रिज़वान (عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) जवाबन तल्बिया (या'नी लब्बैक) कहते हैं, फिर कहते हैं : “येह माहे र-मज़ान की पहली रात है, जन्नत के दरवाज़े उम्मेते मुहम्मद عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के रोज़ेदारों के लिये खोल दिये गए हैं।” (الترغيب والترهيب ج ٢ ص ٦٠ حديث ٢٣)

दो अंधेरे दूर : मन्कूल है कि अल्लाह तआला ने हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह (عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) से फ़रमाया : मैं ने उम्मेते मुहम्मद (عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) को दो नूर अता



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

किये हैं ताकि वोह दो अंधेरो के ज़रर (या'नी नुक़सान) से महफूज़ रहें। हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह **عَلَى نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने अर्ज़ की : **يا اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ !** वोह दो नूर कौन कौन से हैं ? इश्ाद हुवा : **“नूरे र-मज़ान और नूरे कुरआन।”** हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह **عَلَى نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने अर्ज़ की : दो अंधेरे कौन कौन से हैं ? फ़रमाया : **“एक क़ब्र का और दूसरा क़ियामत का।”** (نُزْرَةُ النَّاصِحِينَ ص ९)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

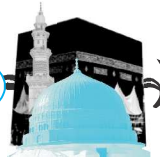
र-मज़ान व कुरआन शफ़ाअत करेंगे : मदीने के सुल्तान, सरदारे दो जहान **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने अ़लीशान है : रोज़ा और कुरआन बन्दे के लिये क़ियामत के दिन शफ़ाअत करेंगे। रोज़ा अर्ज़ करेगा : **“ऐ रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ !** मैं ने खाने और ख़्वाहिशों से दिन में इसे रोक दिया, मेरी शफ़ाअत इस के हक़ में क़बूल फ़रमा।” **कुरआन** कहेगा : **“मैं ने इसे रात में सोने से बाज़ रखा, मेरी शफ़ाअत इस के लिये क़बूल कर।”** पस दोनों की शफ़ाअतें क़बूल होंगी।

(مسند امام احمد ج ٢ ص ٥٨٦ حديث ٦٦٣٧)

लाख र-मज़ान का सवाब : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا** से रिवायत है कि सरकारे नामदार **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने खुश गवार है : **“जिस ने मक्कए मुकर्रमा में माहे र-मज़ान पाया और रोज़ा रखा और रात में जितना मुयस्सर आया क़ियाम किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये और जगह के एक लाख र-मज़ान का सवाब लिखेगा और हर दिन एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब और हर रात एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब और हर रोज़ जिहाद में घोड़े पर सुवार कर देने का सवाब और हर दिन में नेकी और हर रात में नेकी लिखेगा।”**

(ابن ماجه ج ٣ ص ٥٢٣ حديث ٣١١٧)

काश ! ईद मदीने में हो ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के हबीब, हबीबे लबीब, हम गुनाहों के मरीजों के तबीब **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का दियारे विलादत मक्कए



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क्रियामत के दिन मैं उस से मुसा-फ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँगा)। (अबु शकुल)

मुकर्रमा ﷺ है। अल्लाह तआला ने अपने हबीबे मुकर्रम ﷺ के सड़के में गुलामाने मुस्तफ़ा पर किस क़दर लुत्फ़ो करम फ़रमाया है ! ऐ काश ! हमें भी मक्कए मुकर्रमा ﷺ में माहे र-मज़ान गुज़ारने की आज़ीम सआदत नसीब हो जाए और उस में ख़ूब इबादत की भी तौफ़ीक़ मिले और फिर माहे र-मज़ान गुज़ार कर फ़ौरन ही ईद मनाने के लिये अपने मीठे मीठे आका मक्की म-दनी मुस्तफ़ा ﷺ के रौज़ए ज़ियाबार पर हाज़िर हो जाएं और वहां पर रो रो कर “ईदी” की भीक मांगें और सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के मकीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन ﷺ की रहमत जोश पर आ जाए और ऐ काश ! सरकार ﷺ के दरबारे गुहर-बार से हम गुनहगार बतौरे “ईदी” बे हिसाब मग़ि़रत की बिशारत पाने की सआदत पा लें।

या नबी ! अत्तार को जन्नत में दे अपना जवार

वासिता सिद्दीक़ का जो तेरा यारे ग़ार है

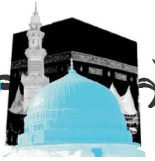
(वसाइले बख़्शिश, स. 480)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! ﷺ

आका इबादत पर कमर बस्ता हो जाते : उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीका रज़ी अल्लैह तआला عنها फ़रमाती हैं : जब माहे र-मज़ान आता तो शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत ﷺ बीस दिन नमाज़ और नींद को मिलाते थे पस जब आख़िरी अशरह होता तो अल्लाह عزّوجلّ की इबादत के लिये कमर बस्ता हो जाते।

(مسند امام احمد ج ٩ ص ٣٣٨ حديث ٢٤٤٤)

आका र-मज़ान में ख़ूब दुआएं मांगते थे : एक और रिवायत में फ़रमाती हैं : जब माहे र-मज़ान तशरीफ़ लाता तो हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे आदम ﷺ का रंग मुबारक मु-तग़य्यर (या'नी तब्दील) हो जाता और नमाज़ की



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (तौमयी)

कसरत फ़रमाते और ख़ूब दुआएं मांगते।

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ۳ ص ۳۱۰ حدیث ۳۶۲۵)

आका र-मज़ान में ख़ूब ख़ैरात करते : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : “जब माहे र-मज़ान आता तो सरकारे मदीना ﷺ हर कैदी को रिहा कर देते और हर साइल को अता फ़रमाते।”

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ۳ ص ۳۱۱ حدیث ۳۶۲۹)

क्या आका की हयाते ज़ाहिरी के दौर में कैदी होते थे ? : मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَان बयान कर्दा हदीसे पाक के हिस्से : “हर कैदी को रिहा कर देते” के तहत मिरआत जिल्द 3 सफ़हा 142 पर फ़रमाते हैं : हक़ येह है कि यहां कैदी से मुराद वोह शख़्स है जो हक्कुल्लाह या हक्कुल अब्द (या’नी बन्दे के हक़) में गिरफ़्तार हो और आज़ाद फ़रमाने से उस के हक़ अदा कर देना या करा देना मुराद है।

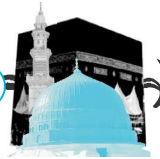
सब से बढ़ कर सख़ी : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : “रसूलुल्लाह ﷺ लोगों में सब से बढ़ कर सख़ी थे और र-मज़ान शरीफ़ में आप ﷺ (खुसूसन) बहुत ज़ियादा सखावत फ़रमाते थे। जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام र-मज़ानुल मुबारक की हर रात में मुलाक़ात के लिये हाज़िर होते और रसूले करीम, रऊफ़रहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَام उन के साथ कुरआने अज़ीम का दौर फ़रमाते। जब भी हज़रते जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام आप ﷺ की ख़िदमत में आते तो आप ﷺ तेज़ चलने वाली हवा से भी ज़ियादा ख़ैर (या’नी भलाई) के मुआ-मले में सखावत फ़रमाते।”

(بخاری ج ۱ ص ۹ حدیث ۶)

हाथ उठा कर एक टुकड़ा ऐ करीम ! हैं सख़ी के माल में हक़दार हम

(हदाइके बख़्शिश शरीफ़, स. 83)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! ﷺ



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियाँ लिखता है। (ترمذی)

हज़ार गुना सवाब : हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़्ख़ **عَلَيْهِ وَحْسَةُ اللَّهِ الْقَوِي** फ़रमाते हैं : “माहे र-मज़ान में एक दिन का रोज़ा रखना एक हज़ार दिन के रोज़ों से अफ़ज़ल है और माहे र-मज़ान में एक मर्तबा तस्बीह करना (سُبْحَانَ اللَّهِ कहना) इस माह के इलावा एक हज़ार मर्तबा तस्बीह करने (سُبْحَانَ اللَّهِ कहने) से अफ़ज़ल है और माहे र-मज़ान में एक रक्अत पढ़ना ग़ैरे र-मज़ान की एक हज़ार रक्अतों से अफ़ज़ल है।”

(تفسيرُ الرَّسُولِ ج ١ ص ٤٥٤)

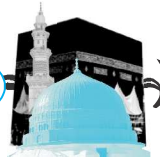
र-मज़ान में ज़िक्र की फ़ज़ीलत : अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि रसूले अन्वर, मदीने के ताजवर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने रूह परवर है : र-मज़ान में ज़िक्रुल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** करने वाले को बख़्श दिया जाता है और इस महीने में अल्लाह तआला से मांगने वाला महरूम नहीं रहता।

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ٣١١ حديث ٣٦٢٧)

सुन्नतों भरा इज्तिमाअ और ज़िक्रुल्लाह : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वोह लोग कितने खुश नसीब हैं जो इस माहे मुबारक में खुसूसियत के साथ सुन्नतों भरे इज्तिमाआत में शिर्कत की सआदत हासिल करते और अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** से अपनी दुनिया व आख़िरत की भलाई का सुवाल करते हैं। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी का सुन्नतों भरा इज्तिमाअ अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा ज़िक्रुल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ही पर मुश्तमिल होता है क्यूं कि तिलावत, ना'त शरीफ़, सुन्नतों भरा बयान, दुआ और सलातो सलाम वग़ैरा सब ज़िक्रुल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** में दाख़िल हैं। दा'वते इस्लामी के इज्तिमाअ की ब-रकात की एक “म-दनी बहार” मुला-हज़ा हो, चुनान्वे

छ⁶ बेटियों के बा'द औलादे नरीना : मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के एक इस्लामी भाई की म-दनी बहार अर्ज़ करता हूं : ग़ालिबन 2003 सि.ई. की बात है, एक इस्लामी भाई ने उन्हें तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा बैनल अक्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ (सहराए मदीना, मदीनतुल औलिया मुलतान) में शिर्कत

बक्कीअं
जन्तुल



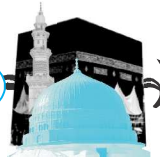
फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो मुझ पर एक बार दुरुद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात अन्न लिखता है और (عبدالرزاق) क़ीरात उहद पहाड़ जितना है।

बेटा मिले, बेटी मिले, कुछ न मिले, हर हाल में शुक्र कीजिये : बिलफ़र्ज दुआ
 की क़बूलियत का असर ज़ाहिर न हो तब भी हर्फ़े शिकायत ज़बान पर नहीं लाना चाहिये। हमारी भलाई किस बात में है इस को यकीनन **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हम से ज़ियादा बेहतर जानता है। हमें हर हाल में पाक परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र गुज़ार बन्दा बन कर रहना चाहिये। वोह **बेटा** दे तब भी उस का शुक्र, **बेटी** दे तब भी शुक्र, दोनों दे तब भी शुक्र और न दे तब भी शुक्र, हर हाल में शुक्र शुक्र और शुक्र ही अदा करना चाहिये। पारह **25** सू-रतुश्शूरा की आयत नम्बर **49** और **50** में इशदि बारी तअ़ाला है :

لِلّهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَخْلُقْ مَا يَشَآءُ
 يَهْبُ لِسْنِ يَشَآءُ اِنَّا وَ يَهْبُ لِسْنِ يَشَآءُ الذَّكٰوَرُ
 اُوَيَّرُوْهُمْ ذُكْرًا وَاُنَاثًا وَيَجْعَلُ مِّنْ يَّشَآءُ
 عَقِيْبًا اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह ही के
 लिये है आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत, पैदा करता है जो चाहे, जिसे चाहे बेटियां अता फ़रमाए और जिसे चाहे बेटे दे या दोनों मिला दे बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बांझ कर दे बेशक वोह इल्म व कुदरत वाला है।

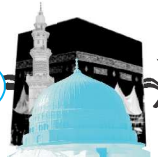
“ख़ज़ाइनुल इरफ़ान” में आयत नम्बर **50** के इस हिस्से (जिसे चाहे बांझ कर दे) के तहत है : (या'नी) “कि उस के औलाद ही न हो, वोह (या'नी **अल्लाह तअ़ाला**) मालिक है, अपनी ने'मत को जिस तरह चाहे तक्सीम करे, जिसे जो चाहे दे। अम्बिया **عَلَيْهِمُ السَّلَام** में भी येह सब सूरतें पाई जाती हैं, हज़रते लूत व हज़रते शुऐब **عَلَيْهِمَا السَّلَام** के सिर्फ़ **बेटियां** थीं, कोई बेटा न था और हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** के सिर्फ़ फ़रज़न्द (या'नी बेटे) थे, कोई दुख़्तर (या'नी बेटी) हुई ही नहीं और सय्यिदे अम्बिया हबीबे खुदा मुहम्मदे मुस्तफ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को **अल्लाह तअ़ाला** ने चार फ़रज़न्द अता फ़रमाए और चार साहिब ज़ादियां।” (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 898)
हुज़ूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की मुक़द्दस औलाद की ता'दाद : दा'वते इस्लामी के



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जब तुम रसूलों पर दुरुद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम ज़हानों के रब का रसूल हूँ। (جمع الجوامع)

इशाअती इदारे मक्क-त-बतुल मदीना के मत्बूआ 48 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले, “ज़िन्दा बेटी कूएं में फेंक दी” सफ़हा 7 ता 8 पर है : सरकारे मदीना ﷺ के चार फ़रज़न्द होने का अगर्वे “ख़ज़ाइनुल इरफ़ान” में ज़िक्र है मगर इस में इख़्तिलाफ़ है, तीन शहज़ादों का भी कौल है और दो का भी। चुनान्वे “तज़्कि-रतुल अम्बिया” सफ़हा 827 पर है : आप (ﷺ) के तीन बेटे थे : क़ासिम, इब्राहीम, अब्दुल्लाह। ख़याल रहे कि तय्यिब, मुतय्यिब, ताहिर और मुतहहर इन्हीं (या’नी हज़रते अब्दुल्लाह (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) के अल्काब थे, येह कोई अला-हदा बेटे नहीं थे। (तज़्कि-रतुल अम्बिया, स. 827) हज़रते अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आ’ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي “सीरते मुस्तफ़ा” सफ़हा 687 पर लिखते हैं : इस बात पर तमाम मुअर्रिख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है कि हुज़ूरे अक्दस ﷺ की औलादे किराम की ता’दाद छ⁶ (तो यकीनन) है। दो फ़रज़न्द हज़रते क़ासिम व हज़रते इब्राहीम (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) और चार साहिब ज़ादियां हज़रते ज़ैनब व हज़रते रुक़य्या व हज़रते उम्मे कुल्सूम व हज़रते फ़ातिमा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ) लेकिन बा’ज़ मुअर्रिख़ीन ने येह बयान फ़रमाया है कि आप ﷺ के एक साहिब ज़ादे अब्दुल्लाह (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) भी हैं जिन का लक़ब तय्यिब व ताहिर है। इस कौल की बिना पर हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की मुक़द्दस औलाद की ता’दाद सात है या’नी तीन साहिब ज़ादगान और चार साहिब ज़ादियां। (सीरते मुस्तफ़ा, स. 687)

र-मज़ान का दीवाना : मुहम्मद नामी एक आदमी सारा साल नमाज़ न पढ़ता था। जब र-मज़ान शरीफ़ का मु-तबर्क महीना आता तो वोह पाक साफ़ कपड़े पहनता और पांचों वक़्त पाबन्दी के साथ नमाज़ पढ़ता और साले गुज़श्ता की क़ज़ा नमाज़ें भी अदा करता। लोगों ने उस से पूछा : तू ऐसा क्यूं करता है ? उस ने जवाब दिया : येह महीना रहमत ब-र-कत, तौबा और मग़ि़रत का है, शायद अल्लाह तअ़ाला मुझे मेरे इसी अमल के सबब बख़्श दे। जब उस का इन्तिफ़ाल हो गया तो किसी ने उसे ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ या’नी अल्लाह तअ़ाला



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुझ पर दुरुद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरुद पढ़ना बरोज़े कियामत तुम्हारे लिये नूर होगा ! (فردوس الاخیار)

ने तेरे साथ क्या मुआ-मला किया ? उस ने जवाब दिया : “मेरे अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ने मुझे एहतिरामे र-मज़ान शरीफ़ बजा लाने के सबब बख़्श दिया ।”

(ذُرَّةُ النَّاصِحِينَ ص ۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह बे नियाज़ है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? खुदाए रहमान **عَزَّوَجَلَّ**

माहे र-मज़ान के क़द्रदान पर किस द-रजा मेहरबान है कि साल के बाकी महीने छोड़ कर सिर्फ़

माहे र-मज़ान में इबादत करने वाले की मग़िफ़रत फ़रमा दी । इस हिकायत से कहीं कोई येह न

समझ बैठे कि अब तो (**مَعَادُ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ**) सारा साल नमाज़ों की छुट्टी हो गई !! सिर्फ़ र-मज़ानुल

मुबारक में रोज़ा नमाज़ कर लिया करेंगे और सीधे जन्नत में चले जाएंगे । प्यारे इस्लामी भाइयो !

दर अस्ल बख़्शाना या अज़ाब करना येह सब कुछ अल्लाह तअ़ाला की मशियत पर मौकूफ़ है,

वोह बे नियाज़ है, अगर चाहे तो किसी मुसल्मान को ब ज़ाहिर छोटे से नेक अमल पर ही अपने

फ़ज़ल से बख़्श दे और अगर चाहे तो बड़ी बड़ी नेकियों के बा वुजूद किसी को महज़ एक छोटे

से गुनाह पर अपने अद्ल से पकड़ ले । पारह 3 सू-रतुल ब-क़रह की आयत नम्बर 284 में

इशदि रब्बे बे नियाज़ है :

فَيَغْفِرُ لِمَن يَّشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَّشَاءُ

(۲۸۴: البقرة)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जिसे चाहेगा (अपने

फ़ज़ल से अहले ईमान को) बख़्शेगा और जिसे चाहेगा

(अपने अद्ल से) सज़ा देगा ।

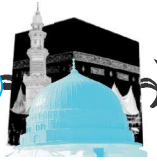
तू बे हिसाब बख़्श कि हैं बे शुमार जुम

देता हूं वासिता तुझे शाहे हिजाज़ का

तीन के अन्दर तीन पोशीदा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कोई नेकी छोड़नी नहीं चाहिये,

न जाने अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** को कौन सी नेकी पसन्द आ जाए और कोई छोटे से छोटा गुनाह करना नहीं

चाहिये कि न जाने किस गुनाह पर अल्लाह तअ़ाला नाराज़ हो जाए और उस का दर्दनाक अज़ाब



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरुद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरुद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

घेर ले। ख़लीफ़ आ'ला हज़रत, फ़कीहे आ'ज़म सय्यिदुना अबू यूसुफ़ मुहम्मद शरीफ़ मुहद्दिस कोटलवी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَي** नक्ल फ़रमाते हैं : “**اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ने तीन चीज़ों को तीन चीज़ों में मख़्फ़ी (या'नी पोशीदा) रखा है, **﴿1﴾** अपनी रिज़ा को अपनी इताअत में और **﴿2﴾** अपनी नाराज़ी को अपनी ना फ़रमानी में और **﴿3﴾** अपने औलिया को अपने बन्दों में।” (**تَنْبِيْهُ الْمُتَغْتَرِبِينَ** ص ५१) यह क़ौल नक्ल करने के बा'द फ़कीहे आ'ज़म **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَر** फ़रमाते हैं : “लिहाज़ा हर ताअत और हर नेकी को अमल में लाना चाहिये कि मा'लूम नहीं किस नेकी पर वोह राज़ी हो जाए और हर बदी से बचना चाहिये क्यूं कि मा'लूम नहीं किस बदी पर वोह नाराज़ हो जाए। ख़्वाह वोह बदी कैसी ही सगीर (या'नी छोटी) हो। म-सलन (बिला इजाज़त) किसी के तिन्के का ख़िलाल करना ब ज़ाहिर एक मा'मूली सी बात है या किसी हमसाए की मिट्टी से उस की इजाज़त के बिग़ैर हाथ धोना गोया एक छोटी सी बात है मगर मुम्किन है कि इस बुराई में ही हक़ तआला की नाराज़ी मख़्फ़ी (या'नी छुपी हुई) हो तो ऐसी छोटी छोटी बातों से भी बचना चाहिये।” (अख़्लाकुस्सालिहीन, स. 60)

कुत्ते को पानी पिलाने वाली बख़्शी गई : रहमत के तलब गारो ! जब **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** बख़्शने पर आता है तो ब ज़ाहिर नेकी कितनी ही छोटी हो वोह इसी के सबब करम फ़रमा देता है। जैसा कि एक औरत को सिर्फ़ इस लिये बख़्श दिया गया कि उस ने एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाया था। (بخاری ج ۲ ص ۴۰۹ حدیث ۳۳۲۱) एक हदीस में सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** का येह फ़रमाने आलीशान भी मिलता है कि एक शख़्स ने रास्ते में से एक दरख़्त को इस लिये हटा दिया ताकि लोगों को इस से ईज़ा न पहुंचे। **اَللّٰهُ تَعَالٰی** ने खुश हो कर उस की मग़्फ़रत फ़रमा दी। (مسلم ص ۱۴۱ حدیث ۱۹۱۴) एक सहीह हदीस में तकाज़े (या'नी कर्ज़ के मुता-लबे) में नरमी करने वाले एक शख़्स की नजात हो जाने का वाक़िआ भी आया है। (بخاری ج ۲ ص ۱۲ حدیث ۲۰۷۸) **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की रहमत के वाक़िआत जम्अ करने जाएं तो इतने हैं कि जम्अ करना मुश्किल हो जाए।

नेक 'नमाजी' बनने के 'लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❶ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आशिकाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❷ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक्सद : "मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। ۱۱ شَاءَ اللّٰهُ " अपनी इस्लाह के लिये "मदनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। ۱۱ شَاءَ اللّٰهُ



0133186



मक़तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- अहमदआबाद :- फैज़ाने मदीना, श्री कोनिया बगीचे के पास, मिरज़ापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
 देहली :- मक़तबतुल मदीना, 421, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ मस्जिद, देहली - 6, फ़ोन : 011-23284560
 मुम्बई :- फैज़ाने मदीना, ग्राऊंड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
 हैदरआबाद :- मक़तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदरआबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 24572786

E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com, Web : www.dawateislami.net